मंत्रालय और समाज कल्याण मंत्रालय में जाकर वे अपनी दस्तक देते हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही हैं । उनके साथ बड़ा अन्याय होता हैं । उन्होंने कई बार ज्ञापन दिया हैं और एक ज्ञापन तो उन्होंने भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर जी के द्वारा हस्ताक्षरित कराकर भी भेजा हैं, परन्तु उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही हैं । यदि आप उनकी तरफ ध्यान देंगे तो वे आपको बड़ी दुआएं देंगे और फिर इससे आपके कर्त्तव्य का पालन भी हो जाएगा । मैं चाहता हूं कि उनकी तरफ सरकार का ध्यान जाए ।

उपसभापति : रक्षा मंत्री जी, इसमें दो चीजें हैं । मैं इस बारे में सरकार का ध्यान खींचना चाहूंगी कि एक तो वे विकलांग हैं जो लड़ाई में, एक्शन में, टेरेरिस्ट्स के साथ एक्शन में विकलांग बन गए हैं, जो जन्म से विकलांग नहीं थे और कुछ ऐसे विकंलाग हैं जो जन्म से विकलांग हैं- सुन नहीं सकते हैं, चल नहीं सकते हैं, स्पेस्टिक चिल्ड्रन हैं, मेंट्ली, फिज़िकली हेडीकेप्ड हैं । इस सिलसिलें में पार्लियामेंट से हम लोगों ने एक बिल पास किया । सरकार ने उस पर बहुत ध्यान दिया, मंत्री जो बहुत अच्छा बोले, मगर आगे उस पर कुछ हुआ नहीं हैं । अब यह सब जो हमारे माननीय सदस्य ने उठाया हैं, भंडारी जी ने, उसमें सबसे बड़ी बात यह हैं कि जो कमेटी हैं उसमें सिर्फ विकलांगों के रिप्रर्जेटेटिव्स जो उनकी कमेटियों में हैं, जो उनको चलाते हैं, वही नहीं बल्कि उनके जो मां-बाप हैं, उनके भी रिप्रज़ेंटेटिव्स उसमें लेने चाहिए क्योंकि उनको बड़ी समस्या होती हैं, उनको बड़ी मुसीबत से गुजरात पड़ता हैं विकलांग बच्चों को संभालने के लिए और उनके फ्यूचर के लिए । तो ऐसी बहुत सी संस्थाएं हैं जो उनके मां-बाप से ताल्लुक रखती हैं । जो विकलांगों के मां-बाप हैं, उनके पेरेंट्स हैं, उनकी समस्याओं को भी सरकार को ध्यान में रखता चाहिए । मैं उम्मीद करती हूं कि यहां जो सरकार के लोग बैठे हुए हैं, पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर साहब, आप यह बात सरकार को बतालएं, रक्षा मंत्री जी अपना दखेंगे और यह सोशियल वेलफेयर मिनिस्ट्री के अंतर्गत आता हैं । यह बड़ी भारी समस्या हैं, आज हजारों विकलांग यहां आए हैं । उनकी आवाज़ को अगर हाउस में हम लोग नहीं बोलेंगे, जो फॉरच्युनेट हैं,जो बोल सकते हैं, चल सकते हैं, तो फिर दूसरा कौन बोलेगा ? वे तो बोल भी नहीं सकते, चल भी नहीं सकते, सून भी नही सकते हैं ।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (DR. U. VENKATES-WARLU): I will convey, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: So, please convey and become the voice, ears and eyes of those who are unfortunate.

DR. U. VENKATESWARLU: I will convey. Madam.

RE. REPORTED STATEMENT BY SHRI AJATSHATRU SINGH FOR REFERENDUM ON P.O.K.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली) : उपसभापति महोदया, मैं इस सदन का ध्यान जम्मू-कश्मीर सरकार के एक मंत्री, श्री अजातशत्रु सिंह ने पिछले दिनों जो एक वक्तव्य दिया हैं और जिसमें यह कहा गया हैं कि जम्मू और कश्मीर में रिफ्रेंडम कराकर जो सीमा-रेखा हैं, इसको अंतर्राष्ट्रीय सीमा-रेखा बना दिया जाएगा और जो पाकिस्तान आकूपाइड कश्मीर हैं, उसका भाग पाकिस्तान के पास रह जाए, उस वक्तव्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । मैं इस गंभीर बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जम्मू और कश्मीर का विलय भारत में इंस्ट्रूमेंट आफ एक्सेशन से हुआ था । इस इंस्ट्रूमेंट आफ एक्सैशन, जिसमें कि महाराजा हरि सिंह ने, उनके दादा ने हस्ताक्षर किए थे, उसमें यह बात साफ तौर पर लिखी हुई हैं कि :-

> "The terms of this my Instrument of Accession shall not be varied by any amendment of the Act or of the Indian Independence Act, 1947."

Section 3, Part II of the Constitution of Jammu & Kashmir says:

> "The State of Jammu & Kashmir is and shall be an integral part of the Union of India."

Section 4 says:

> "The territory of the State shall **—the world used here is "shall" —"comprise all the territories which, on the 15th day of August, 1947 were under the sovereignty or suzerainty of the Ruler of the State."

Further, section 147 says:

> "No Bill or amendment seeking to make any change in the provisions of section 3 shall be introduced or

moved in either Rouse of the Legislature."

And the Constitution (Application to Jammu & Kashmir) Order, 1954 says:

"Provided further that no Bill providing for increasing or diminishing the area of the State of Jammu & Kashmir or altering the name or boundary of the State shall be introduced in Parliament without the consent of the Legislature of that State."

महोदय, किसी व्यक्ति को कोई अधिकार नहीं हैं कि वह इस तरह की कोई बात करे। न जम्मू-कशमीर के कांस्टीटयूशन के मुताबिक, न इंस्ट्रूमेंट आफ ऐक्सैशनके मुताबिक और ने हिन्दुस्तान के कांस्टीटयूशन मुताबिक इसके किसी भाग को भी किसी के पास छोड़ने की बात की जा सकती हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हमने पाकिस्तान आकूपाइड कश्मीर में जो हिस्सा रह गया हैं, उसके लिए जम्मू-कश्मीर असेम्बली मेंसीटें छोड़ रखी हैं और वे सीटें आज भी खाली पड़ी हुई हैं।

हमारा युनैनिमस रेज़ोल्यूशन हैं दोनों सदनों का जिसमें दोनों सदनों ने, लोक सभा ने और राज्य सभा ने अभी पिछलें साल यह रेज़ोल्यूशन पास किया कि अनफिनिश्ड टास्क इतना बचा हैं कि पाकिस्तान आकुपाईड कश्मीर का हिस्सा भारत में कैसे लाया जाए, केवल इतनी बात बची हुई हैं। दोनों सदनों के बीच रेज़ोल्यूशन के बाद और कांस्टीट्यूशनल प्रोविजन के बाद एक व्यक्ति का खड़े होकर रेफरेंडम की बात करना, मैं समझता हूं कि यह भर्त्सना योग्य हैं और निंदनीय हैं। मैं जानता हूं कि फारुख अब्दुल्ला जी ने बहुत अच्छा स्टैंड लिया अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में। महाराजा कर्ण सिंह और फारुख अब्दुल्ला, दोनों के बयान यह रहे हैं कि यह भारत का हिस्सा हैं, भारत का अंग हैं, इसकी कोई जमीन उनको नहीं दी जा सकती। यह जो रेफरेडम की बात उठी हैं, हमें समझना चाहिए कि इसके खतरे क्या हैं। लगातार हिंदुसतार रिसिस्ट करता रहा, कश्मीर के लोग रिसिस्ट करते रहे। उधर अमरीका कहता रहा, ब्रिटेन कहता रहा लेकिन हमने कहा कि रेर्फरेंडम की बात उठी हैं, हमें समझना चाहिए कि इसके खतरे क्या हैं। लगातार करते रहे। उधर अमरीका कहता रहा, ब्रिटेन कहता रहा लेकिन हमने कहाकि रेर्फरेडम का सवाल पैदा नहीं होता। आप रेफरेडम की बात मानकर एक ट्रैप में फंस जाएंगे। पाकिस्तान इस बात को कह सकता हैं कि आज अगर जम्मू-कश्मीर के एक हिस्से के लिए रेफरेंडम हो सकता हैं तो सारे जम्मू-कश्मीर के लिए क्यों नहीं हो सकता। आज पाकिस्तान को यह खेज खेलने देना या पाकिस्तान के हाथ में यह देना कि कोई रेफरेडम हो सकता हैं, यह ठीक नहीं है। रेफरेडम होने का कोई सवाल पैदा नहीं होता।

महोदया, कल गुजरात साहब ने कहा कि क्लिनटन साहब के बयान की हम निंदा करते है। हमने कहा कि ब्रिटिशन एम.पीज़ जिन्होंने यह रेज़ोल्यूशन रखा, हम उसकी निंदा करते हैं। उसकी निंदा हम क्यों करें, उन्होंने भी तो यही कहा कि डिस्प्यूटेड टैरिटरी हैं और हम खुद मान रहे हैं कि यह डिस्प्यूटेड टैरिटरी हैं। महोदया, मुझे आश्चर्य हुआ कि डा. कर्ण सिंह के ध्यान दिलाने के बाद भी उन्होंने वह विदड्रा नहीं किया। उन्होंने अभी तक माफी नहीं मांगी देश के सामने। पहले प्राईम-मिनिस्टर का यह कहना कि हम थोड़ी-बहुत ऐडजस्टमेंट कर सकते हैं, उसके बाद फारुख अब्दुल्ला का यह कहना कि उसको हम इंटरेशनल बाऊंट्री मान सकते हैं और तीसरा इनका स्टेटमेंट, क्या इसके पीछे कोई डिजाइन हैं ? क्या हिंदुस्तान का एक हिस्सा पाकिस्तान के हाथ में देने कि बात की जा रही हैं ? भारत सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि हिंदुस्तान की एक इंच जमीन भी उनकों नही दी जाएगी। बिना किसी शर्त के जोर से इस बात की घोषणा होनी चाहिए।

वह तो कहेंगे कि क्या कोई ऑफर हैं आपको पाकिस्तान की तरफ से ? मैं समझ सकता था कोई ऑफर होती तों। उनसे यहां पर बात की जाती। अब तो "लड़ के लिया आधा कश्मीर, हंसकर लेंगे बाकी कश्मीर" इस बात के वहां पर नारे लग रहे हैं। उन्होंने लड़कर जो हिस्सा ले लिया, ले लिया। अब हिंदुस्तान की इस आपसी बातचीत से बाकी कश्मीर के ऊपर अपनी नज़र रखेंगे।

महोदया, कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग हैं, हिंदुस्तान का अविभाज्य अंग हैं। इसके बारे में कोई ऐसी बात कहना बहुत निंदनीय और भर्त्सना योग्या हैं। यह बात मैं आपके सामने रखना चाहता हूं।

उपसभापति : सरोज खापर्डे जी, आप बोलिए ...(**व्यवधान**)...

I will call you. Your names are there. I wiil allow you.

Let these people speak.

कुमारी सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : महोदया, प्रोफेसर विजय कुमार मल्होत्रा मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं और उनका मैं बहुत आदर करती हूं। उन्होंने जो अपने विचार इस सदन के सामने रखे हैं, मैं उनसे बिल्कुल सहमत नहीं हूं। महोदया, मै यह कहना चाहूंगी कि पाकिस्तान

आकुपाईड कश्मीर जो हैं, यह भारत का एक इंटिअल पार्ट हैं, हम लोग यह बात आज से नहीं बल्कि सालों से यह बात कहते आ रहे हैं । इसके बावजूद जम्मू-कश्मीर के मंचों द्वारा उठाई गई जो बात हैं, मैं समझती हूं कि यह बहुत गलत बात हैं । महोदया, जैसा कि आप भी जानती हैं, देश भी जानना हैं, प्रो, विजय कुमान मल्होत्रा साहब भी जानते हैं और इस सदन के सम्मानित सदस्य भी जानते हैं...

हमारी फौज के नौजवानों ने अपने देश के चप्पे-चप्पे के लिए अपनी जान की कुरबनी भी दी हैं और अपने प्राण भी दिए हैं और इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए जम्मू-कश्मीर के मंत्री महोदय जो प्रस्ताव लाए हैं और आपने जो विचार रखे हैं मैं इससे सहमत नहीं हूं । इन शब्दों के साथ धन्यवाद (**व्यवधान**)

उपसभापति : वह भी सहमत नहीं है (**व्यवधान**)

विपक्ष नेता (श्री सिकन्दर बख्त) : सदर साहिबा, यह बहुत अहम बात हैं ...(**व्यवधान**)

†**شری سکندر بخت:** صدر صاحبہ۔ یہ بہت اہم بات ہے..."مداخلت"...

कुमारी सरोज खापर्डे : जो आपने विचार रखे हैं वह आपके विचार हैं । मैं यह नहीं कह रही हूं कि आपके विचार मेरे विचारों से कुछ अलग रखें हैं । लेकिन आपके विचार राजनीतिपूर्ण हैं । इन राजनीतिपूर्ण विचारों को मैने बार-बार यहां उद्धरित किया हुआ हैं ।

श्री सिकन्दर बख्त : मुझे जो कुछ कहना था उसके मुताल्लिक सरोज खापर्डे जी ने कह दिया हैं क्यों जो विषय था बेसिकली, उनके अल्फाज़ से उनके उनके फिलोसोपिक ऐतराज हो इनकी तकरीर से लेना जो बुनियादी बात हैं उससे आप इत्तफाक करते हैं कि हिन्दुस्तान के किसी व्यक्ति को खास तौर से किसी जिम्मेदार व्यक्ति को हमारे कश्मीर के किसी हिस्से को अलहदा करने के सिलसिले मे कोई बात कहें और उनकी कही बात से यह बात निकलती हो तो अलहदा की जा सकती हैं । अगर उससे आपको इत्तफाक हैं तो मुझे कुछ नहीं कहना हैं । ...(**व्यवधान**)

†**شری سکندر بخت:** مجھے جو کہنا تھا اس سے متعلق سروج کھاپڑے جی نے کہہ دیا ہے کیونکہ جو و شے تھا بیسکلی، انکے الفاظ، سے انکے فلوسوپک اعتراض ہو انکی تقریر سے لینا جو بونیادی بات ہے اس سے آپ اتفاق کرتے ہیں کہ ہندوستان کے کسی حصے کو علیحدہ کرنے کے سلسلے میں کوئی بات کہیں اور ان کی کہی بات سے یہ بات نکلتی ہو تو علحیدہ کی جا سکتی ہے۔ اگر اس سے آپکو اتفاق ہے تو مجھے کچھ نہیں کہنا ہے..."مداخلت"...

कुमारी सरोज खापर्डे : आपको राजनीतिक चिंता हैं, हमें देश की चिंता हैं, फर्क इतना ही हैं ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: This House and all Members are a witness to a unanimous resolution it passed about P.O.K. So, there cannot be two opinions about it. I think all of us, including the Chair, are unanimous on this.

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West) Bengal): Madam, so far as Jammu and Kashmir it concerned, umpteen times we have made it qujte clear that it is an integral part of India. The former prime Minister mentioned on behalf of the nation that the only unfinished task is to recover the Pak Occupied Kashmir. Therefore, I do not know why this issue is debatable here. At the same time, Madam, I would request the House through you that when we are entering into a dialogue with Pakistan on resolving all outstanding issues within the framework of the Simla Agreement, which is also very clear, nothing should be done to vitiate the atmosphere of the talk, because what is needed is resolving of issues between India and Pakistan. Whatever is said on the floor of the House has its own implications. It is more applicable to those who are occupying offices. If they make unguarded utterances and make some sort of commitment, it would put the country in a difficult situation. That should be av-oided. But, so far as the position of the

†Transliteration in Arabic Script

nation is concerned, I think, there is a consensus that Kashmir is an integral part of India and we cannot compromise on that. We cannot secede an inch of our country to anybody.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA (Punjab): Madam, I am amazed that Prof. Vijay Kumar Malhotra has to raise this issue to prove his patriotism. It is not really required. The fact of the matter is that even such gimmicks ...*(Interruptions)*

उपसभापति : मुझे सुनने तो देते नही, फिर मैं कैसे कमेंट करूं। ...(**व्यवधान**)

Let me hear him. I have not heard what he said. He said about patriotism. I think nobody should object when he says about patriotism.

SHRI SURINDER KUMAR SING-LA: The fact of the matter is that such gimmicks were played on Kashmir, when Dr. Joshi, who was then President of the B.J.P., went to unfurl the flag ...*(Interruptions)*

उपसभापति : अच्छा सुन तो लीजिए क्या कह रहे हैं ? फिर बाद में ऐतराज़ करेंगे कुछ गलत बोलेगे तो। हम तो बैठे हैं बना करने को। अभी तो बोलने दीजिए।

SHRI SURINDER KUMAR SING-LA: Madam, they only play to the gallery. In fact, as my senior leader, Shri Pranab Mukherjee has said in this House, as every India including every political party has said again and again the entire Jammu and Kashmir is an integral part of India. Shri Ajatshatru Singh was on record saying that he has been misquoted by the Press. ...*(Interruptions)*.. Madam, he has been misquoted by the Press. The Chief Minister of Jamu and Kashmir, Dr. Farooq Abdullah and Dr. Karan Singh who is a Member of this House were on record saying that it is the right and power of the Indian Parliament to discuss about it and nobody else can discuss it. They have already stated about this fact. Why are we discussing abou it? It is in the interest of the people of these two countries, India and Pakistan, to discuss about it. The people of these two countries are looking forward with hope that there would be an amicable settlement which is in the interest of the two countries. I feel that we should not have raised this issue here at all. By raising this issue, Prof. Malhotra has complicated the matters. This kind of complication of the matter is not desireble.

प्रो. विजय कुमान मल्होत्रा (दिल्ली) : मैडम, आपके बोलने के बाद भी ऐसी बात कर रहे हैं ? ...(**व्यवधान**)... अगर ये भी उनके साथ सहमत हैं तो बात करे। ...(**व्यवधान**)...

The Chairman has allowed me. you said these things.

SHRI K.R. MALKANI (Delhi): Madam, how many Members can associate themselves?

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश) : उनकी पार्टी के दो लोग बोल चुके हैं । ...(**व्यवधान**)... उनकी बात का हम अवश्य विरोध करेंगे। ...(**व्यवधान**)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Gurudas Das Gupta, after the declaration by the House that, the POK is a part of India, is there anything left out?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Madam, I would just make one point. ...*(Interruptions)*... I am only saying ...*(Interruptions)*.. I am only saying ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: How can any Member disassociate himself with that? The POK is a part of India. ...*(Interruptions)*...

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI (Uttar Pradesh): From 1951 onwards his party has said a number of times that ...*(Interruptions)"*. With an hour's notice, I would go to my house and bring ...*(Interruptions)*... From Mr. Surjit downwards ...*(Interruptions)*... The CPM has also said that same thing. I am amazed at the turn-around in th*#tand which the party seems to have taken.

SHRI MD. SALIM (West Bengal): We have supported it. What are you saying? ... *(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, I am only saying ...*(Interruptions)*...

SHTI TRILOKI NATH CHATURVEDI: He was saying that it was a gimmick. There was no gimmick. anq%

आपके ज़ोर से बोलने से मैं दबने वाला नही हूं । सलीम साहब, आप ज़ोर से बोल सकते हैं तो दूसरे भी जोर से बोल सकते हैं । मैं दबने वालों में से नही हूं । अगर दबने वालों में होता तो बहुत पहले ही चला जाता ।

उपसभापति : बैठिए .... बैठिए ...(**व्यवधान**)... बैठ जाइए...Please sit down.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : मैडम, मैं आपके कहने पर सब पेपर्स यहां रखने के लिए तैयार हूं । ...(**व्यवधान**)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. What do I mean by 'sit down'? 'Sit down* also means that you should not speak. 'Sit down' also means that you should not apeak while I am standing to speak. There are no two opinions and there can never be two opinions, either in this House or outside this Hosue, in the country, that POK is an integral part of India. So, whatever argument is going on in this respect is beyond my understanding. It is going beyond my head. I do not know what the *Vivad* is. I don't understand as to what the difference of opinion is. *(Interruptions)* I rquest you to please keep quiet. It is a very serious matter. It is a matter relating to our country's image. This reflects the seriousness of the Members of Parliament about an area which is being occupied illegally by

another country. If they are going to sort out the matter by way of a talk, let the Government have a talk to setle the problem. All of us want to settle the problem without giving even a centimetre or a millimetre of our land. That is the question here. We had passed a resolution on the floor of this Hosue to this effect. How can anybody go beyond that? So, there cannot be any discussion on that matter. *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, you called my name but I was obstructed. J was not allowed to speak. I must be allowed to make my submission. My point is very clear. The point is, Kashmir is an integral part of India, and this point is not a debatable point. No party in this country stands for a solution of Kashmir by surrendering Kashmir to Pakistan. That is not the issue. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: What is the issue? Let me hear. I do not know.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: We are dictated by our conscience, understanding and reasons. We are not dica-tated by anybody else. *(Interruptions)* There is another issue. The issue is, Kashmir is well-known to us. At the same time, the issue is, in this sub-continent, there has to be ...*(Interruptions)*

SHRI K.R. MALKANI: What is this? Why is he referring to the sub-continent? *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: What is the problem?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mal-kani Ji, what is the problem?

श्री विष्णुकान्त शास्त्री : सब-कांटीनेंट नहीं हैं उपमहाद्वीप नहीं हैं । ...(**व्यवधान**)...

SHRI MD. SALIM: If he wants to do this drama, he should do it outside the House. *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I must complete what I am saying, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Malkani, please sit down. Mr. Malkani, continent or sub-continent is a geographical word. Why should anybody get agitated over it? गुरुदास जी बोलिए, अब आप अपनी बात को खत्म कीजिए ।

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, I must finish. This cannot be allowed. *(Interruptions)* I request you to kindly allow me to complete. I am not to be browbeaten by anybody in this House. Let it be known to everybody. This is a House where every Member has an equal

right. You cannot stop me from speaking. *(Interruptions)*

SHRI K.R. MALKANI: You cannot speak like this. *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: She will decide. ...*(Interruptions)*... She will decide. ...*(Interruptions)*...

THEDEPUTY CHAIRMAN: What is it? ...*(Interruptions)*... I didn't hear. ... *(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Madam, what is this? ... *(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, I must complete my submission. ...*(Interruptions)*... I will complete my submission in two minutes. ... *(Interruptions)*...

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: You never want to complete anything. ...*(Interruptions)*,..

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Do you allow me, Madam? ...*(Interruptions)*...

SHRI *S.S.* AHLUWALIA (Bihar): Madam, I am on a point of order. ... *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just one minute. ...*(Interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, my point of order is this. I have seen the convention of this House. Whenever a Member raises a point during the Zero Hour 'or during Special Mentions, Members associate themselves with it. But we have started a new convention of dissociating and this is gone too far and we are unnecessarily dragging it and things have gone out of control. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Right. ... *(Interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, the point is that you must give your ruling on this. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Gurudas Das Gupta, *aap baithiye.* I will call you again.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, you must give your ruling. When a Member is raising a point of information or sharing a point of information with the Government, through you, if anybody is interested in associating himself with it, he should be allowed to associate. It depends on you. But dissociation should not be allowed- ...*(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA: No, no. ... *(Interruptions)*...

AN HON. MEMBER: The House cannot be run like this. ... *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: He has asked me. ...*(Interruptions)*...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Different points of view can be discussed only during debates, not during Zero Hour mentions. It is the right of the Chairman to give permission. At the time of permission you should consider whether it will attract a debate or not. If it is likely to attract a debate, you should give adequate time. ...*(Interruptions)*...

SHRI SATISH AGARWAL (Rajasthan): Zero Hour mentions do not lead to a debate. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I agree. ... *(Interruptions)*...

SHRI SATISH AGARWAL: Zero Hour mentions do not lead to a debate. Zero Hour mentions are not meant for a debate. Dissociation will lead to a debate. This is not permissible. Dissociation means that the Chairman has committed a mistake in allowing a particular Member to make a Zero Hour submission. Dissociation means that. ... *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am sorry to comment over here. When it hurts a Member he says that there should be no dissociation. When it hurts another Member he wants dissociation. Fortunately or unfortunately, each

Member—I can say from my memory and from the record—has violated the rule of association and dissociation in this House. Nobody is above that. No one in this House can get up and say that he has not associated or dissociated himself with some points. This point cannot be decided by the Chair alone. In my opinion, a matter which is raised in the Zero Hour or a Special Mention is not always such a simple matter that there would be no dissociation. Sometime.;, when matters, which may hurt or attack some other political party or their views or their opinions are raised, there has always been dissociation. I have seen it from my experience. Mr. Ahluwalia should have also experienced it. I would be very happy if the House itself decides a rule that there is only association. If anybody wants another Special Mention, he can have it. At this moment today, in this case or in any other case I cannot arbitrarily give my ruling to that effect. ...*(Interruptions)*... Now the House is going to be adjourned.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO (Andhra Pradesh): Madam Deputy Chairperson, this is a convention of the House. ...*(Interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्तः सदर साहिबा, मैं...

उपसभापति : पहले वे कुद कह रहे हैं, उनकी बात सुन लू और फिर आपकी बात सुनूंगी।

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: Madam Deputy Chairperson, this is a convention of the House. ... *(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA: Madam, you close the matter:

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: No, Madam. I have to make a submission on this. This House has a

1.00 P.M.

convention regarding certain issues to which hon. Members have been associating themselves. Madam, to associate yourself with an issue does not necessarily mean to agree or disagree with the issue. When you associate yourself with an issue, that means you want to express your opinion on that particular issue. Let us not distort this convention and the procedure of the House by saying that association means you cannot say anything against that particular issue. It can be for or it can be against. When you associate yourself with an issue, you just want to participate in the discussion. ...*(Interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहिबा, मुझे सिर्फ यह अर्ज करना हैं कि वजाहिर तो यह लगता हैं कि पूरा हाउस जो बात आपने कही हैं उससे मुत्ताफिक हैं। लेकिन कुछ बातों को स्ट्रेच किया जा रहा हैं। मामला सीधा सीधा यह था कि जम्मू और कश्मीर के एक मिनिस्टर साहब ने एक बयान दिया हैं जो हमारे मुल्क के इंटरेस्ट में नहीं जाता हैं। मामला सिर्फ इतना था। अब सरोज साहिबा ने कहा, उनकी बात समझ में आ गई। उन्होंने कहा कि वह बेसिक इश्यू से इत्तफाक करती हैं। उसके कहा कि और आनरेबल मेंबर ने खड़े होकर बात की और उन्होंने उसको हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रिलेशनशिप से जोड़ दिया। बात बिल्कुल मेहदूद हैं, सीमित हैं। उस किस्म का कोई बयान जो कश्मीर के सिलसिले में हिन्दुस्तान के इंटरेस्ट के खिलाफ जाता हों, वह नहीं आना चाहिए। इसके ऊपर बात और नहीं हैं। वह डिम-एसोसिएशन हो या एसोसिएशन हो,कुछ भी हो लेकिन इस बेसिक चीज से ऊपर जाने का हक एक हिन्दुस्तानी होने के नाते किसी को हो नहीं सकता हैं। मुझे सिर्फ इतना ही कहना हैं।

†**شری سکندر بخت:** صدر صاحبہ، مجھے صرف یہ عرض کرنا ہے کی بظاہر تو یہ لگتا ہے کی پورا ھاؤس جو بات آپنے کہی ہے اس سے متفق ہے۔ لیکن کچھ باتوں کو اسٹریچ کیا جا رہا ہے۔ معاملہ سیدھا سیدھا یہ تھا کی جمو اور کشمیر کے ایک منسٹر صاحب نے ایک بیان دیا ہے جو ہمارے ملک کے

† Transliteration in Arabic Script

انٹریسٹ میں نہیں جاتا ہے۔ معاملہ صرف اتنا تھا۔ اب سروج صاحیبہ نے کہا ، ان کی بات سمجھ میں آگئی۔ انہوں نے کہا کی وہ بیسک ایشو سے اتفاق کرتی ہیں۔ اسکے بعد ایک اور آنریبل ممبر نے کھڑ ھے ہوکر بات کی اور انہوں نے اسکو ھندوستان اور پاکستان کے ریلیشن شپ سے جوڑ دیا۔ بات بلکل محدود ہے، سیمت ہے۔ اس قسم کا کوئ بیان جو کشمیر کے سلسلے میں ھندوستان کے انٹریسٹ کے خلاف جاتا ہو، وہ نہیں آنا چاہئیے۔ اسکے اوپر بات اور نہیں ہے۔ وہ ڈس ایسی ایشن ہو، یا کچھ بھی لیکن اس بیسک چیز سے اوپر جانے کا حق ایک ھندوستانی و ہونے کے نا طے کسی کو ہو نہیں سکتا۔ مجھے صرف اتنا ہی کہنا ہے۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't you agree with what he said? That matter is closed. Because you also agree that Kashmir is an integral part of India.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, I am asking Mr. Gurudas Das Gupta.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: It is not. ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Raksha Mantriji, do you want to say something?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I am not speaking. You have upheld my right. I am not speaking

THE DEPUTY CHAIRMAN: Raksha Mantriji, with your comment I will adjourn the House.

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव) : आपने इतना अच्छा बोल दिया हैं, जो हम बोलना चाहते थे आपने उससे और आगे, और बढ़कर बोल दिया हैं । इसलिए मुझे बोलने की आवश्यकता नहीं हैं । मैं इस सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि जो पहले सरकार की नीति थी कि कश्मीर पर अनधिकृत कब्जा जो पाकिस्तान का हैं वह हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग हैं, यह पहले भी था और आज भी और किसी भी कीमत पर कश्मीर हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग रहेगा । इसके लिए कितनी भी बड़ी कुर्बानी करनी पड़े सभी कुर्बानी करेंगे ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for lunch for one hour.

The House then adjourned for lunch at three minutes past one of the clock

The House reassembled after lunch at nine minutes past two of the clock, The Vice-Chairman (Shri Sanatan Bisi) in the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Statement by Shri T.G. Venkatraman.

STATEMENT REGARDING ORDINANCE

National Highways Laws (Amendment) Ordinance, 1997

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI T.G. VENKATRAMAN): Sir, I beg to lay on the Table, a Statement (in English and Hindi) explaining the circumstances which had necessitated immediate legislation by National Highways Laws (Amendment) Ordinance, 1997.

(Placed in Library. *See* No. LT-1473/ 97)

THE NATIONAL HIGHWAYS LAWS (AMENDMENT) BDLL, 1997

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI T.G.